पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

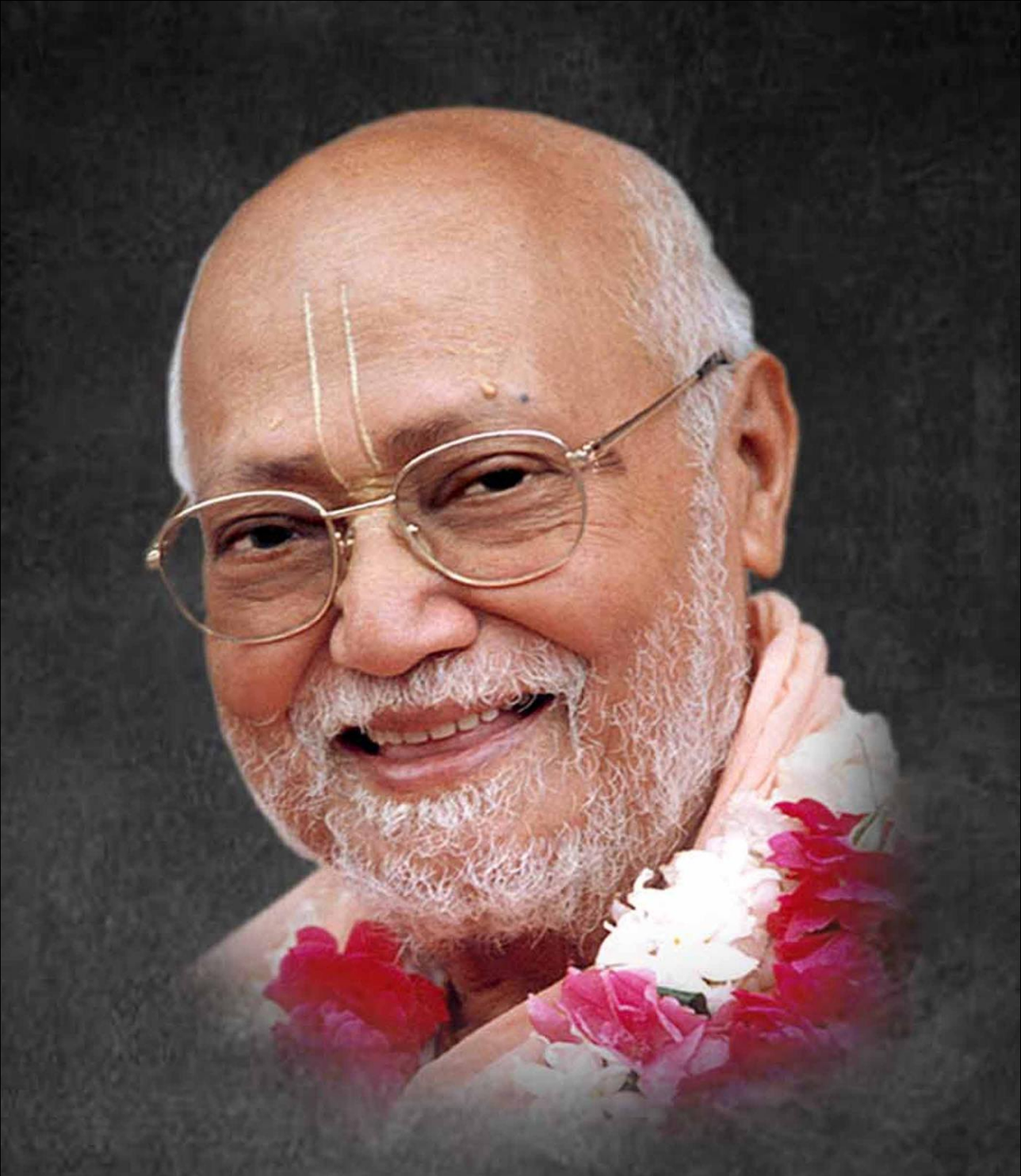

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 8

पन्द्रहवें वर्ष की श्रीचैतन्य वाणी की वन्दना में श्रील गुरुदेव की उपदेशवाणी

श्रीलगुरुदेव

दुनियावी इच्छा के पूरा हो जाने पर भी शान्ति नहीं आएगी । ईश्वर तथा पुनर्जन्म में विश्वास संयत जीवन बिताने में सहायक

जगत के लोग अपने चिन्मय स्वरूप को भूले हुए हैं, इसी कारण वे अपने इस जड़ीय शरीर को ही सब कुछ समझते हैं। शरीर में अभिमान होने के कारण ही उनमें जागतिक वस्तुओं की माँग बढ़ गयी है और यही कारण है कि जगत के

लोग सीमित, नाशवान और परिवर्तनशील वस्तुओं के लिये खुद ही ताबडतोड़ हाय-हाय मचाते हुए पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय अशान्ति को निमन्त्रण दे रहे हैं। लोगों में दुनियावी वस्तुओं को इकट्ठा करने की व उन सब वस्तुओं को अपने पास बनाये रखने की होड़ सी लग गयी है। इसी होड़ में भाई-भाई आपस में लड़ रहे हैं। यहीं नहीं, एक गाँव का दूसरे गाँवों से, एक जिले का दूसरे जिलों से, एक प्रदेश का अन्य प्रदेशों से तथा एक देश का दूसरे-दूसरे देशों से संघर्ष चल रहा है जिससे सभी को आपसी

संघर्ष का भय हमेशा बना रहता है। इसका परिणाम यह है कि सभी अपने बचाव को लेकर हमेशा उद्विग्न से बने रहते हैं व अपनी रक्षा के लिए कठोर परिश्रम करते हुए व्यस्त रहते हैं। सभी अपने आप में इतने व्यस्त से हैं कि किसी को भी दूसरों के बारे में सोचने की फुर्सत ही नहीं मिल पा रही है।

ऐसे स्वरूप- भ्रमित मनुष्य दुःखों को हटाने का प्रयास तो कर रहे हैं परन्तु भ्रमित होने के कारण दुःख हटाने के चक्करों में वह अपने झमेले ही बढ़ा रहे हैं। ऐसे में

श्रीचैतन्य वाणी को छोड़कर क्या कोई ऐसा उपाय है जो विश्व को इस विषम परिस्थिति से छुटकारा दिला सके अर्थात् सुख पाने की अभिलाषा से पागलों की तरह अनावश्यक पदार्थों के पीछे दौड़ते हुए विश्ववासियों को इस भ्रमित स्थिति के लिए सतर्क कर सके व उन्हें वास्तविक सुख व वास्तविक आनन्द की ओर चला सकें?

जीवों को स्वरूप - विचार में यदि विवर्त होगा अर्थात् भ्रम हो जाएगा तो उनका साध्य अर्थात् लक्ष्य भी भ्रमित सा रहेगा । यही

नहीं, ऐसी स्थिति में यह निश्चित है कि उस भ्रमित लक्ष्य को पाने के लिए उनकी साधना भी भ्रमित ही होगी।

अतत्त्वतोऽन्यथा बुद्धिर्विवर्त्त इत्युदाहृतः

(सदानन्द कृत वेदान्तसारं' 49 संख्या)

अर्थात जो वस्तु, जो नहीं है, उसमें उस वस्तु की ही प्रतीति हो जाने का नाम ही विवर्त (भ्रम) है। ये विवर्त जीवों के लिए एक महादोष है।

माया में फंसा जीव इसी दोष के कारण विभिन्न प्रकार के अनर्थों से पीड़ित रहता है। जाति व वर्ण से रहित इस विश्व का मूल कारणअसीम चिन्मय वस्तु हैं । वह चिन्मय वस्तु ही 'ब्रह्म', 'परमात्मा' व 'भगवान' कहलाती है। तत्त्व को जानने वाले इसी चिन्मय वस्तु को अद्वय ज्ञान व अद्वितीय वास्तव वस्तु तथा परमार्थ कहते हैं। ये अद्वयज्ञान ही तमाम ज्ञान व अज्ञान का कारण है। ये कारण-चेतन ही तमाम कार्य चेतनों का आश्रय है, व उनका तोषण-पोषण करने वाला है। प्रत्येक कार्य-चेतन या अणु चेतन

या यूँ कहें कि भगवान की अन्तरंगा चिशक्ति से उत्पन्न व तटस्था शक्ति से अन्वय व व्यतिरेक भाव से उत्पन्न जीवों की सत्ता व सुख-स्वतन्त्रता व इनकी हरेक तरह से उन्नति, इनके कारण चेतन के ऊपर ही निर्भर होती है। अतः ऐसी अवस्था में तमाम चेतनों की अर्थात् जीवों की स्वार्थ-गति पूर्ण, चेतन वस्तु की ओर होनी चाहिए। ऐसा न होने से स्वरूप भ्रम की अवस्था में उसे मालूम ही नहीं पड़ेगा कि उसका क्या प्रयोजन है व क्या उसके लिए अप्रयोजनीय है। ऐसे में यदि उसे केवल दुनियावी वस्तुओं

को इकट्ठा करने के लिए ही प्रोत्साहित किया जाये तो उपरोक्त आत्मज्ञान के उपदेश उसके लिए बेकार ही हैं और उस रास्ते पर चलते हुए उन्हें किसी भी वास्तविक सुत का तो स्पर्श होगा ही नहीं बल्कि उसकी दौड़ दुनियावी वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए और बढ़ जाएगी और वह अपनी बुद्धि के वास्तविक स्वार्थ का दुरुपयोग करेगा। चेतन अर्थात् आत्मा अपनी अपेक्षित स्वतन्त्रता के कारण जड़ीय विषयों व वस्तुओं में फंसकर उसी में तन्मय हो जाती है। हाँ, यदि कोई उसका ये भ्रम तोड़ दे एवं उसे

उसका चिन्मय स्वरूप बता दे, उसे सुखमय चिन्मय राज्य का चिन्तन करना सिखा दे तो धीरे-धीरे उसके अज्ञान के आवेश में कमी आयेगी, नाशवान वस्तुओं को प्राप्त करने की उसकी ललक में भी कमी आयेगी और इसके साथ ही उसके कलह तथा युद्ध की भावना भी खत्म होगी।

चूँकि कारण-चेतन (भगवान) सुखमय है, इसलिए प्रत्येक अणुचेतन में भी स्वाभाविक रूप से सुख की मांग है। अणुचेतन अर्थात अणुज्ञान स्वरूप जीव, चाहे उन्नत

अवस्था में हों या पतित-अवस्था में, हरेक अवस्था में ही इनमें ज्ञान की मांग स्वाभाविक ही है। वैसे चेतन की सत्ता जड़ वस्तुओं से अर्थात अचेतन से बिल्कुल अलग है, इसलिए नित्य है। इसीलिए हरेक अणुचेतन के अन्दर हमेशा रहने की तीव्र इच्छा देखी जाती है। जिस प्रकार नारितत्त्व कभी भी अस्तित्त्व का कारण नहीं होता उसी प्रकार अज्ञान अर्थात् जड़ वस्तुएँ कभी भी चेतन का कारण नहीं हो सकतीं। जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण नहीं होता उसके विनाश का भी कोई कारण नहीं हो सकता।

इसलिए तमाम जीव नित्य हैं अर्थात् सनातन हैं। अतः जीवात्मा नित्य है, इसलिए उसका प्रयोजन परमात्मा या भगवान भी नित्य हैं । परमात्मा या भगवान् असीम हैं और वह परमात्मा यदि अनन्त जीवों को पूर्ण रूप से मिल भी जाये तो इससे भगवान् के पूर्णत्त्व में ज़रा सी भी कमी नहीं आती है, जबकि, जगत की सीमित वस्तु यदि कोई एक व्यक्ति या एक देश अपने अधीन कर ले तो दूसरे व्यक्ति या दूसरे देश उससे वन्चित रह जाते हैं और हिंसा-द्वेष व मात्सर्य परायण होकर आपस में झगड़ते रहते हैं।

जीव अपने कर्मफल से भले ही अनित्य परिवेश में पड़ जाये, परन्तु उसका स्वरूपज्ञान जागृत रहने से वह अनित्य परिवेश में वास करते हुए भी अथवा अनित्य पदार्थों का व्यवहार करते हुए भी उनमें कभी भी आसक्त नहीं होता। अनासक्तभाव से ही जागतिक कर्त्तव्यों को पूरा करने में समर्थ होता है। ज़रुरत पड़ने पर विषयों या भोगों को स्वीकार करके भी वह उनमें आसक्त, मोहित या उनके वशीभूत नहीं होता है । त्रिगुणात्मक जगत् में रहने पर भी अपने निर्गुण स्वरूप का स्मरण होने के कारण

निर्गुणधाम के प्रति ही उसकी प्रगति होती रहती है। आसक्ति ही जीव के बन्धन और मुक्ति का कारण है। गुणमय विषयों में आसक्ति ही बन्धन का कारण तथा निर्गुण श्रीहरि तथा उनके धाम व उनके परिकर आदि में आसक्ति ही मुक्ति और परम सुख का कारण होती है।

वर्तमान राजनैतिक नेता लोग सर्वेश्वरेश्वर परमानन्दकन्द सर्वकारण कारण तथा सर्वशक्तिमान् श्रीकृष्ण की उपेक्षा करके अथवा उनके प्रति उदासीन होकर देश और देश के कल्याण के लिये जो चेष्टा कर रहे

हैं, उससे वे राष्ट्र का वास्तविक हितसाधन करने में जरा भी समर्थ नहीं होंगे। श्रेष्ठ व्यक्ति जैसा आचरण करते तथा बोलते हैं, साधारण लोग उसे ही प्रमाण और मंगलजनक समझ कर उसका अनुकरण करते हैं। कुछेक राजनैतिक और सामाजिक नेताओं की धारणा है कि ईश्वर-विश्वास दुर्बलता से उत्पन्न भावना है, किन्तु यदि वे धीर-स्थिरभाव से चिन्तन करके देखें तो पाएँगे कि ईश्वर विश्वास प्रत्येक प्राणी में स्वतः ही सिद्धभाव से थोड़ा बहुत है।

ईशिता या ऐश्वर्य जहाँ है उसे न मानने वाला कोई भी प्राणी पृथ्वी पर नज़र नहीं आता, यहाँ तक कि, पशु-पक्षी, चींटियों आदि को भी गौर से देखने से मालूम पड़ेगा कि वे भी ईश्वर को श्रेष्ठ मानती हैं। लीडर को मानने से ही थोड़ा-बहुत ईश्वर को मानने का भाव आ जाता है । यदि लीडर की योग्यता के सीमित मानदण्ड को असीम में चिन्तन किया जाये तो उनको न मानने की कोई युक्ति है, वह मेरी समझ में नहीं आती । परमेश्वर के सर्वान्तर्यामित्व, सर्वशक्तिमत्ता एवं सर्वज्ञता आदि गुण सहजता से ही अनुभव किये जा

सकते हैं। अपने चोरी आदि असत्कार्यों द्वारा गर्वमेंट की सीमित शक्ति को धोखा दिया जा सकता है, किन्तु असीम अनन्त शक्तिमयतत्त्व परमेश्वर को धोखा देना सम्भव नहीं है। वे सर्वनियन्ता होने के कारण तथा सभी प्राणियों के प्रति उनका स्नेह रहने के कारण सबके हितकर्ता हैं, जिस कारण वे दुष्टों का दमन और सज्जनों का पालन अवश्य ही कर सकते हैं और करते हैं। दुष्ट और शिष्ट- दोनों ही उनके द्वारा यथायथभाव से तिरस्कृत और पुरस्कृत होते हैं।

आत्मा का नित्यत्व होने के कारण पुनर्जन्म में विश्वास युक्तिसंगत और स्वाभाविक है। इसलिये इस जन्म के अच्छे तथा बुरे कर्मों का फलभोग सभी प्राणियों को करना होगा। बलवान जब दुर्बलों के प्रति अत्याचार करें तो भले ही यहाँ दुर्बल उनका कुछ न कर पायें पर कर्मफल भोग के समय उन्हें उनका फल अवश्य ही भोगना होगा। उन्हें वहाँ कोई भी बचा न पायेगा । परमेश्वर का हिसाब किताब बिल्कुल ठीक चलता है तथा वे सभी को उचित समय पर उचित फल प्रदान करते हैं तथा करेंगे। यह सब विचार

समाज में प्रचारित होने पर बहुत से लोग संयम से जीने के लिए चेष्टा करेंगे। यही नहीं, इस सु-प्रचार से वे हिंसारहित जीवनयापन करते हुए दूसरों को परहिंसा रहित करने की चेष्टा करेंगे तथा परहिंसा से पीड़ित होने की दुर्भावना भी शान्त होगी।

श्रील गुरुदेव जी के नेतृत्त्व में व उनकी शुभ उपस्थिति में कोलकाता 35, सतीश मुखर्जी रोड पर स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में वार्षिक उत्सव - 24 जनवरी 1975 शुक्रवार से 28 जनवरी मंगलवार तक, 16 जनवरी 1976 शुक्रवार से

20 जनवरी मंगलवार तक; 1 जनवरी 1977 शनिवार से 5 जनवरी बुधवार तक; 20 जनवरी 1978 शुक्रवार से 24 जनवरी मंगलवार तक एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी उपलक्ष्य में पाँच दिवसीय धर्मानुष्ठान - 30 अगस्त 1975 शनिवार से 3 सितम्बर बुधवार तक; 18अगस्त 1976 बुधवार से 22 अगस्त रविवार तक; 5 सितम्बर 1977 सोमवार से 10 सितम्बर शनिवार तक व छः दिवसीय धर्मानुष्ठान, 25 अगस्त 1978 शुक्रवार से 30 अगस्त

बुधवार तक महासमारोह के रूप में सुसम्पन्न हुए।

कोलकाता हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश, श्री विमल चन्द्र वसाक, श्री जयन्त कुमार मुखोपाध्याय, एडवोकेट, श्री ईश्वरी प्रसाद गोयन्का, नवद्वीप स्थित श्रीचैतन्य सारस्वत मठ के अध्यक्ष, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति रक्षक श्रीधर देव गोस्वामी महाराज, पश्चिम बंगाल सरकार के भूमिराजस्व-मन्त्री, श्री गुरुपद खाँ, पश्चिम बंगाल सरकार के अर्थमन्त्री, श्री शंकर घोष, कोलकाता हाईकोर्ट के

माननीय न्यायधीश, श्री बंकिम चन्द्रराय, माननीय न्यायाधीश, श्री निखिल चन्द्र तालुकदार, माननीय न्यायाधीश श्री अमलकृष्ण दे, यादवपुर विश्वविद्यालय के भट्टाचार्य, डा० ए० एन० वसु, पुरी के पण्डित पदम्श्री, श्रीसदाशिव रथशर्मा, कलकत्ता हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश, श्रीरामकृष्ण शर्मा, भूतपूर्व न्यायाधीश, माननीय श्री रमाप्रसाद मुखोपाध्याय, प्रोफेसर नारायण चन्द्र गोस्वामी, माननीय न्यायाधीश, श्री रविन्द्र नाथ भट्टाचार्य, कोलकाता पुलिस कमिश्नर, श्रीसुनील चन्द्र चौधरी,

माननीय न्यायाधीश, श्री सलिल रायचौधरी, पश्चिम बंगाल सरकार के वाणिज्य और शिल्पमन्त्री, श्रीतरुण कान्ति घोष, पश्चिम बंगाल सरकार के अवसरप्राप्त आई० जी० पी०, श्री उपानन्द मुखोपाध्याय, माननीय न्यायाधीश, श्री निर्मल चन्द्र मुखोपाध्याय, उड़ीसा राज्य सरकार के खाद्यमन्त्री, श्री गंगाधर महापात्र, माननीय न्यायाधीश, श्री सव्यसाची मुखोपाध्याय, पुरी के एडवोकेट, श्री नारायण मिश्र, कलकत्ता विश्व विद्यालय के उपाचार्य, डा० श्री सत्येन्द्रनाथ सेन, धनबाद के एडवोकेट,

श्रीनिरंजन लाल भागनिया, पण्डित रघुनाथ मिश्र, उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व गवर्नर, श्री विश्वनाथ दास, दक्षिण पूर्व रेलवे के पब्लिक सर्विस कमिशन के अध्यक्ष, श्री हरिहर दास, माननीय न्यायाधीश, श्री तरुण कुमार वसु, माननीय न्यायाधीश, श्री अमरनाथ वन्द्योपाध्याय, माननीय न्यायाधीश श्री विमल चन्द्र मुखोपाध्याय, कलकत्ता विश्व विद्यालय के संस्कृत विभाग के सीनियर प्रोफेसर, श्री कृष्णगोपाल गोस्वामी, बंगीय संस्कृत शिक्षा परिषद् के सम्पादक, श्री नारायण भट्टाचार्य, माननीय

न्यायाधीश, श्री सलिल कुमार हाजरा, पश्चिम बंगाल सरकार के मन्त्री, श्री अतीश चन्द्र सिंह, अध्यापक, श्री त्रिपुरा शंकरसेन शास्त्री, माननीय न्यायाधीश, श्री अजित कुमार सरकार, पश्चिम बंगाल सरकार के शिल्प और वाणिज्य मन्त्री, डा० कनाईलाल भट्टाचार्य, अध्यापक, श्री हरिपद् भारती, कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपाचार्य, डा० सुशील कुमार मुखोपाध्याय, माननीय न्यायाधीश, श्रीसलिल कुमार दत्त, श्रीकाशीनाथ मैत्र, श्री मनुज चन्द्र सर्वाधिकारी, डा० सुनील कुमार सेन, माननीय

न्यायाधीश, श्री अमरेन्द्र नाथ सेन, कोलकाता कार्पोरेशन के एडमिनिस्ट्रेटर, श्री शिवप्रसाद समाद्दार, माननीय न्यायाधीश, श्रीरविन्द्र नाथ पाइन- ये सब कलकत्ता मठ के वार्षिक और श्रीजन्माष्टमी के उपलक्ष्य में हुई धर्म सभाओं में सभापति, प्रधान अतिथि और विशिष्ट वक्ता के रूप से उपस्थित हुये थे।

सभा में विचारणीय विषय निर्धारित थे- 'समाज कल्याण में श्रीगौड़ीय मठ का अवदान', 'सनातनधर्म का वैशिष्ट्य', 'युगधर्म

श्रीनाम संकीर्त्तन', 'श्रीचैतन्यदेव और विश्व शान्ति', 'अनन्यभक्ति का श्रेष्ठत्त्व', 'स्वयं भगवान श्रीकृष्ण', 'परमपुरुष भक्तिवश', 'मनुष्य जन्म का वैशिष्ट्य', 'भवव्याधि की महौषधि-वैकुण्ठनामग्रहण', 'महावदान्य श्रीचैतन्यदेव', 'श्रीगीता की शिक्षा', 'श्रीकृष्ण-भक्ति का गूढ़ माहात्म्य', 'आध्यक्षिक और अधोक्षज ज्ञान का वैशिष्ट्य', 'मानवजाति की एकता के लिए भागवतधर्म', 'श्रीचैतन्यदेव की दया और आशीर्वाणी', 'व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण', 'भक्ति और भक्त की सर्वोत्तमता', 'जीव के बन्धन और

मुक्ति का कारण', 'श्रीकृष्ण कीर्त्तन की अतुलनीय महिमा', 'श्रीचैतन्य महाप्रभु का शिक्षा वैशिष्ट्य', 'धर्म-समाज और विश्व का हितकर अथवा अहितकर', 'श्रीहरिनाम संकीर्त्तन', 'श्रेयः और प्रेयः में जीव के लिये कौन सा ग्रहणीय', 'श्रीकृष्णप्रेम ही सभी जीवों को प्रीतिसूत्र में आबद्ध और सुखी करने में समर्थ है', 'श्रीचैतन्यदेव की दया का वैशिष्ट्य', 'भगवत्प्राप्ति का उपाय', 'सर्वोत्तम उपास्य श्रीकृष्ण' , 'भगवत-पूजा से भी भक्तपूजा की अधिक उपयोगिता', 'हिंसा, अहिंसा और प्रेम', 'नाम,

नामाभास और नामापराध', 'धर्मानुशीलन की उपकारिता', 'ईश्वर और जीव का सम्बन्ध', 'आत्मधर्म ही विश्व की शान्ति और एकता की स्थापना में समर्थ', 'भक्ति ही साध्य और साधन', 'श्रीहरिनाम संकीर्त्तन ही युगधर्म', 'नैतिक जीवन की नींव ईश्वर-विश्वास', 'अवतारी श्रीकृष्ण', 'भक्त की सेवा का महात्म्य', 'भगवत् प्राप्ति के पथ अनेक अथवा एक', 'वर्णाश्रम से भागवत् धर्म का वैशिष्ट्य', 'सर्वोत्तम साधन-श्रीहरिनामसंकीर्त्तन'।

श्रील गुरुदेव जी के उन गुरु-भाईयों के नाम जिन्होंने धर्मसभाओं में योगदान दिया व भाषण दिया था

- परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डियति श्रीमद्भक्ति रक्षक श्रीधर देव गोस्वामी जी महाराज, परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विचार यायावर महाराज, परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्त्यालोक परमहंस महाराज, परमपूज्यपाद त्रिदण्डियति श्रीमद् भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज जी, परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति कुमुद सन्त महाराज,

परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद भक्ति कमल मधूसूदन महाराज, परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रापण दामोदर महाराज, परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विकास हृषिकेश महाराज, तथा परमपूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद भक्ति विलास भारती महाराज।

इनके इलावा श्रील गुरुदेव जी के निर्देशानुसार मठ के श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज, श्रीमद् भक्ति विज्ञान भारती महाराज, श्रीमद्

भक्ति सुहृद दामोदर महाराज, श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी महाराज व श्रीमन् मंगल निलय, ब्रह्मचारी, भक्ति शास्त्री, विद्यारत्न एवं गौड़ीय संघ के त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सुहृद अकिंचन महाराज, श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ के श्रीमद् भक्ति वेदान्त पर्यटक महाराज, अध्यापक, श्रीविभु पद पण्डा, तथा सालिस्टिर, श्री नन्ददुलाल दे ने भी विभिन्न दिनों में अपना-अपना भाषण प्रदान किया था। 1975 से 1978 तक कोलकाता मठ के वार्षिक उत्सवों तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में मठ के

अधिष्ठातृ-विग्रह सुन्दर-सुन्दर रथों पर सवार होकर विराट नगरसंकीर्त्तन- शोभायात्रा तथा सुन्दर-सुन्दर बैण्ड पार्टी के साथ कोलकाता के मुख्य मुख्य रास्तों पर भ्रमण के लिए निकलते थे।

श्रीलगुरुदेव